प्रातः क्लास 16/9/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?
ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। रूह अब साकार में है। और फिर प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान है; क्योंकि एडॉप्ट किये हुए हैं। तुम्हारे लिए सभी कहते हैं कि यह भाई–बहन बनाते हैं। बच्चों को बाप ने समझाया है असल में तुम आत्माएँ भाई–2 हो। अब नई सृष्टि होती है तो पहले–2 ब्राह्मण चोटी चाहिए। तुम थे शूद्र। अभी तुम ट्रान्सफर हुए हो। ब्राह्मण भी तो चाहिए ना। प्रजापिता ब्रह्मा का तो नाम वाला है। इस हिसाब से तुम बच्चे समझते हो हम सब भाई–बहन ठहरे। जो भी अपन को ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ कहलाती हैं तो जरूर भाई–बहन ठहरे ना। सभी प्रजापिता ब्रह्मा के सन्तान ब्राह्मण हैं तो भाई–बहन जरूर होनी चाहिए। यह समझाना है बेसमझो को। बेसमझ भी है। और फिर ब्लाइन्ड फेथ भी है। अकल कुछ नहीं। जिनकी पूजा करते हैं, फेथ रखते हैं यह फलाना है; परन्तु जानते कुछ भी नहीं। ल0ना0 की पूजा करते हैं; परन्तु वह कब आये, कैसे यह बने, फिर कहाँ गये कोई भी नहीं जानते। और कोई भी मनुष्य नेहरू आदि को जानते हैं तो उनकी हिस्ट्री बायोग्राफी, जॉग्राफी का भी सब पता है ना। अगर बायोग्राफी को ही नहीं जानते तो क्या काम का। पूजा करते हैं; परन्तु उनकी जीवन कहानी को नहीं जानते। मनुष्यों की जीवन कहानी तो सभी जानते हैं; परन्तु जो बड़े पास्ट हो गये हैं उनकी एक की भी जीवन कहानी को नहीं जानते। शिव के कितने ढेर पुजारी हैं। प्रजा करते रहते फिर मुख से कह देते वह तो पत्थर–ठिक्कर, कण–कण में है। यह जीवन कहानी ठहरी। कच्छ–मच्छ अवतार लेते हैं। 84 लाख योनियों में ले आते। यह तो अकल की बात नहीं हुई। बेअकल होने कारण बेअकलाई का ही काम करते हैं। अकल मत कब पतित नहीं बनते। पतित अक्षर कितना छी छी है। विकारी माना पतित। तो तुम यह समझा सकते हो कि हम ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ हैं, क्योंकि ब्रह्मा के तो औलाद हैं ना। और हैं एडॉप्टेड। कुखवंशावली नहीं। हम है मुख वंशावली ब्राह्मण–ब्राह्मणियाँ। तो भाई–बहन हुए ना। भाई–बहन की आपस में क्रिमनल आई हो न सके। खराब ख्यालात है मुख्य काम की। दूसरे से विकार करते हैं। कोई बच्ची दूसरे से खराब होती है तो माँ–बाप को गुस्सा लगता है ना यह तो न जन्मी होती तो अच्छा। ऐसे बहुत केस होते हैं। तुम कहते हो हम प्रजापिता ब्रह्मा के औलाद हैं। जैसे बेहद के निराकारी बाप के सन्तान है फिर साकार में आने से पहले–2 प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान भाई–बहन बनते हैं। तुम समझते हो हम सब हैं शिवबाबा की सन्तान। भाई–2 हैं यह भी पक्का है। दुनिया को कुछ भी पता नहीं। ऐसे ही सिर्फ कह देते हैं। तुम समझा सकते हो। सभी आत्माओं का बाप वह एक है। उनको ही सभी पुकारते हैं। तुमने चित्र में भी दिखाया है बड़े2 धर्म वाले भी उस निराकार बाप को मानते हैं। वह है निराकारी आत्माओं का बाप। और फिर साकार में सबका बाप प्रजापिता ब्रह्मा है। जो फिर वृद्धि को पाते रहते हैं। भिन्न2 धर्मों में आते जाते हैं। आत्मा तो इस शरीर से न्यारी है। शरीर को देखकर कहते हैं यह अमेरिकन है, यह फलाना है। आत्मा को तो नहीं कहते हैं। आत्माएँ सब शान्तिधाम में रहती है। वहाँ से आती हैं पार्ट बजाने। शरीर पर ही भिन्न2 नाम पड़ते हैं। आत्मा शरीर द्वारा पार्ट बजाती है। उनके आधार पर सभी चलते हैं। तुम कोई भी धर्मवाले को सुनाओ पुनर्जन्म तो लेते आते हैं और ऊपर से भी नये2 आते रहते हैं। तो बाप समझाते हैं तुम भी मनुष्य हो। मनुष्यों को ही तो सृष्टि के आदि–मध्य–अन्त का मालूम होना चाहिए ना कि यह सृष्टि चक्र कैसे फिरता है। उनका रचयिता कौन है। कितना समय इस चक्र को फिरने में लगता है। यह तुम ही जानते हो। देवताएँ तो नहीं जानते। मनुष्य ही जानकर फिर देवता बनते हैं। मनुष्य को देवता बनाने वाला है बाप। बाप अपना और रचना का परिचय देते हैं। तुम जानते हो हम बीजरूप बाप के बीजरूप बच्चे हैं। जैसे बाप इस उल्टे वृक्ष को जानते हैं, हम भी जान गये हैं। मनुष्य मनुष्य को कब यह समझा न सके। हो तुम भी मनुष्य; परन्तु तुमको बाप ने समझाया है जबकि तुम ब्रह्मा के बच्चे बने हो। जब तक कोई यहाँ न आये तो समझ कैसे सके। जब पूरा कोर्स ले समझे तब ब्राह्मणों की सभा में आये। उनको इन्द्र सभा भी कहते हैं। इन्द्र कोई वह पानी की बरसात नहीं बरसाते हैं

इनको इन्द्र सभा कही जाती है। परियाँ भी तुमको बनना है। अनेक प्रकार की परियाँ गाई हुई हैं। कोई बच्ची अच्छी शोभायवान होती है तो कहते हैं ना यह तो जैसे कि परी है। पाउडर आदि लगाकर सुहेनी(खूबसूरत) बन जाती है। सतयुग में तुम बनते हो परियाँ परिज़ाद। अभी तुम ज्ञान स्नान से परियाँ(देवताएँ) बन निकलते हो। तुम समझते हो हम क्या थे क्या बन रहे हैं। जो सदा प्योर बाप है, सदा खूबसूरत है वह मुसाफिर तुमको ऐसा बनाते हैं। वह तो सदैव गोरा है। कब सांवरा बनता नहीं। यहाँ जब आते हैं तो बिल्कुल 100% सांवरा तन में प्रवेश करते हैं। अभी गोरा कौन बनावे? बाप को बनाना पड़े ना। सृष्टि का चक्र तो फिरना ही है। अभी तुम गोरे बनते हो। तुमको पढ़ाने वाला ज्ञान सागर एक ही बाप है। ज्ञान कौन सा? रचयिता और रचना के आदि–मध्य–अन्त का ज्ञान उस ज्ञान सागर बाप के पास ही है। वही ज्ञान का सागर, प्रेम का सागर है। उस बाप की जो महिमा गाई जाती है वह लौकिक बाप की थोड़े ही हो सकती। बेहद के बाप की ही महिमा है। उनको ही सभी पुकारते हैं कि हमको भी ऐसी महिमा वाला आकर बनाओ। अभी तुम बन रहे हो ना नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। पढ़ाई में सभी एकरस नहीं होते। रात–दिन का फर्क रहता है। तुम्हारे पास भी तो आवेंगे बहुत। ब्राह्मण जरूर बनना है। फिर कोई अच्छी रीति पढ़ते हैं कोई कम। पढ़ाई में सबसे अच्छा होगा तो फिर औरों को भी पढ़ा सकेंगे। तुम समझ सकते हो। इतने कॉलेज निकलते रहते हैं बाबा भी कहते हैं कॉलेज ऐसा बनाओ जो कोई भी समझ सके कि इस कॉलेज में रचयिता और रचना की आदि–मध्य–अन्त का नॉलेज मिलता है। बाप भारत में ही आते हैं। तो भारत में ही कॉलेज आदि खोलते रहते हैं। आ(गे) चल बहुत खुलते जावेंगे। बहुत कॉलेज यूनिवर्सिटी आदि चाहिए ना। जहाँ बहुत आकर पढ़ेंगे। फिर जब पढ़ाई पूरी होगी तो आदि सनातन देवी–देवता धर्म में सभी ट्रान्सफर हो जावेंगे। अर्थात् मनुष्य से देवता बन जावेंगे। तुम मनुष्य से देवता बनते हो ना। गायन भी है ना मनुष्य से देवता किये करत ना लागे वार..... यहाँ यह है मनुष्यों की दुनिया। वह है देवताओं की दुनिया। देवताओं और मनुष्यों में रात–दिन का फर्क है। अर्थात् दिन में हैं देवताएँ, रात में हैं मनुष्य। सभी भक्ति ही करते हैं। कोई किसका पुजारी तो कोई किसका पुजारी। अभी तुम पुजारी से पूज्य बनते हो। सतयुग–त्रेता में वेद–शास्त्र आदि कुछ नहीं होते। भक्ति का नाम नहीं होता। वहाँ हैं सभी देवताएँ। मनुष्य होते हैं भक्त। मनुष्य ही फिर देवता बनते हैं। वह है दैवी दुनिया। इनको कहा जाता है आसुरी दुनिया। रामराज्य और रावण राज्य। आगे तुम्हारी बुद्धि में यह थोड़े ही था। राम राज्य–रावण राज्य किसको कहा जाता है। रावण कब आया। कुछ भी पता नहीं था। कहते हैं लंका समुद्र में डूब गया। ऐसे ही फिर द्वारिका के लिए कहते हैं। अभी तुम जानते हो यह सारी दुनिया डूबने की है। सारी दुनिया ही यह बेहद का लंका है। यह सभी डूब जावेगा। पानी आ जावेगा। बाकी स्वर्ग कोई डूबता थोड़े ही है। कितना अथाह धन था। बाप ने समझाया है एक ही सोमनाथ के मंदिर को मुसलमानों ने कितना लूटा है। लूट–2 अभी देखो तो कुछ भी नहीं रहा है। भारत में कितना अथाह धन था। भारत को ही स्वर्ग कहा जाता था। अभी स्वर्ग कहेंगे? अभी तो नर्क है फिर स्वर्ग बनेगा। स्वर्ग कौन, नर्क कौन बनाते हैं यह अभी तुम जान गये हो। रावण राज्य कितना समय चलता है वह भी बताया है। रावण राज्य में कितने अथाह धर्म हो जाते हैं रामराज्य में तो सिर्फ सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी रहते हैं। अभी पढ़ रहे हो। यह पढ़ाई और कोई की बुद्धि नहीं है। वह तो हैं ही रावणराज्य में। रामराज्य होता है सतयुग में। बाप कहते हैं हम तुमको लायक बनाते हैं। नाला(यक) कौन बनाते हैं? देवताओं की लायकी की महिमा और अपने नालायकी की महिमा गाते हैं। बाप समझाते हैं तुम जब पूज्य थे तो वह नई दुनिया थी। बहुत थोड़े मनुष्य थे। अभी तुमको खुशी बहुत होनी चाहिए। भाई बहन तो बनते हो ना। वह भी भाई बहन कहते कि यह घर फिटाते हैं। वही फिर आकर शिक्षा लेते हैं। यहाँ आने से समझते हैं कि नॉलेज तो बहुत अच्छी है। अर्थ समझते हैं ना। भाई–बहन बिगर पवित्रता कह... से आये। सारा पवित्रता पर ही मदार है। बाप आते भी हैं मगधदेश में। जो कि बहुत गिरा हुआ देश है

बहुत पतित है। खान–पान भी बहुत गंदा है। बाप कहते हैं मैं बहुत जन्मों के अन्त वाला ही शरीर में प्रवेश करता हूँ। यही 84 जन्म लेते हैं। लास्ट सो फर्स्ट। फर्स्ट सो लास्ट। मिसाल तो एक का बतावेंगे ना। तुम्हारी डिनायस्टी बनने वाली है। जितना अच्छी रीति समझते जावेंगे फिर तो तुम्हारे पास बहुत आते रहेंगे। अभी यह बहुत ही छोटा झाड़ है। तूफान भी लगते हैं। सतयुग में तूफान की बात ही नहीं। ऊपर से नये2 आत्माएँ रहती हैं। यहाँ तूफान लगने से गिर पड़ते हैं। वहाँ तो माया का तूफान होता ही नहीं। यहाँ तूफान भी छण जाते हैं। वह वहाँ ऐसी कोई बात नहीं। अकाले मृत्यु होता नहीं। यहाँ तो बैठे2 मर जाते हैं। और फिर तुम्हारा माया के साथ युद्ध भी है। तो वह भी हैरान करते हैं। सतयुग में यह नहीं होगा। दूसरे कोई धर्म में ऐसी बातें होती ही नहीं। रामराज्य और रावणराज्य को और कोई समझते ही नहीं। भल सतसंग आदि में जाते हैं वहाँ मरने जीने की बात नहीं होती। यहाँ तो बच्चे एडॉप्ट होते हैं। कहते हैं हम शिवबाबा के बच्चे हैं। उनसे ही वरसा लेते हैं। फिर गिर पड़ते हैं तो वरसा भी खलास। हंस से बदल कर बगुला बन जाते हैं। फिर भी बाप रहम दिल है तो समझाते रहते हैं। कोई फिर से चढ़ पड़ते हैं। थमे रहते हैं। उनको कहेंगे महावीर हनुमान। तुम हो महावीर–महावीरनियाँ। नम्बरवार तो है ना। सबसे पहलवान को महावीर कहा जाता है। आदि देव को भी महावीर कहते हैं। जिससे यह महावीरनियाँ पैदा होती हैं। जो विश्व में राज्य करती हैं। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार रावण पर जीत पाने लिए पुरुषार्थ करते हैं। रावण है 5 विकार। यह तो समझ की बात है ना। अभी तुम्हारी बुद्धि का ताला बाप खोलते हैं। फिर ताला एकदम बन्द हो जाता है। यहाँ भी ऐसे हैं। बहुत हैं जिनकी बुद्धि खुलती नहीं। किसको समझा नहीं सकते हैं। बाप आकर सभी का ताला खोलते हैं। जिनका ताला खुलता है तो जाकर सर्विस करते हैं। बाप कहते हैं जाकर सर्विस करो। गटर में जो पड़े हैं उनको निकालो। ऐसे नहीं कि तुम गटर में गिरो। तुम बाहर निकल औरों को भी निकालो। विषय वैतरणी नदी में अपार दुख है। अभी अपरम्अपार सुखों में चलना है। जो अपरम्अपार सुख देते हैं उनकी महिमा गाई जाती है। रावण जो अपरम्अपार दुख देते हैं उनकी महिमा होगी ना। रावण को कहा जाता है असुर। बाप कहते हैं तुम रावण राज्य में थे ना। अपार दुखी थे। अभी तुम समझते हो अपार सुख पाने लिए यहाँ आते हैं। तुमको कितनी अपार सुख मिलती है। खुशी कितनी रहनी चाहिए। और खबरदार भी रहना चाहिए। पोजीशन तो नम्बरवार होते हैं ना। हरेक एकटर का पोज़ीशन अलग। सभी में ईश्वर तो हो न सके। बाप हर बात बैठ समझाते हैं। तुम बाप की रचना के आदि मध्य अन्त को जान जाते हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। नम्बरवार पढ़ाई पर नम्बर होते हैं ना। यह है बेहद की पढ़ाई। इसमें बच्चों को बहुत अटेन्शन होना चाहिए। पढ़ाई एक रोज भी मिस न हो। हम हैं स्टुडेन्ट। गॉड फादर पढ़ाते हैं। वह नशा बच्चों को चढ़ा रहना चाहिए।

भगवानुवाच सिर्फ उन्होंने भूल से कृष्ण का नाम डाल दिया है। भगवानुवाच कृष्ण समझ लिया है; क्योंकि कृष्ण हुआ नेक्स्ट टू गॉड। बाप के बाद में बड़ा है श्री कृष्ण। स्वर्ग जो बाप स्थापन करते हैं उनमें नम्बरवन यह है ना। यह ज्ञान अभी तुमको मिला है। नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार अपना भी कल्याण करते हैं और दूसरों का भी कल्याण करते रहते हैं। उनको सर्विस बिगर कब सुख नहीं आवेगा। तुम योग और ज्ञान में मजबूत हो जावेंगे तो फिर काम ऐसे करेंगे जैसे जिन। मनुष्य को देवता बनाने की हावी लग जावेगी। मौत के पहले ही पास होना है। सर्विस बहुत करनी है। पीछे तो लड़ाई लगेगी। नेचरल कैलेमिटिज़ भी आवेगी। उनको कहा जाता है खुदाई आपदाएँ। साइंस की आपदाएँ और खुदाई आपदाएँ में फर्क है। वह तो बम्स आदि मनुष्य बनाते हैं जिससे विनाश होता है। यह अर्थक्वेक, फ्लड्स आदि होते हैं। मुसलधार बरसात होती है। यह कोई मनुष्य का काम है क्या। साइंस भी मदद करती है। विनाश में फिर यह नेचरल कैलेमिटिज भी मदद करती है। नई दुनिया तो स्थापन होनी ही है। तो तुम्हारे में अभी कितना फर्क है। भगवान तुमको पढ़ाकर विश्व का मालिक बनाते हैं। तो कितनी खुशी रहनी चाहिए। यह तो तुम जानते हो

यहाँ ही हिसाब किताब चुक्तू होना है। फिर नई दुनिया में कुछ भी बीमारी आदि नहीं होगी। सजाएँ भी यहाँ ही खानी होगी। सजाएँ भी खाकर पावन तो बनना ही है। हरेक को अपना–2 पुरुषार्थ करना है। दूसरे का ख्याल हम क्यों करें। वह पुरुषार्थ न करेंगे तो पावन भी नहीं। नम्बरवार तो जरूर चाहिए ना। स्वर्ग में ऐसे थोड़े ही है सिर्फ एक राजा–रानी होते हैं। उन्हों की दास–दासियाँ भी तो होती हैं ना। साहुकार प्रजा, गरीब प्रजा, मीडियम प्रजा भी होते हैं। वह तो बनने ही हैं। तुम देखते ही रहते हो। पिछाड़ी में सब सा0 होंगे। कि किस(ने) कितनी मेहनत की कितना उसका फल मिलना है। ऐसे नहीं तुम ऐसे ही चले जावेंगे। रॉयल घराणे के कौन होंगे सब सा0 होता रहेगा। जैसे बताते हैं ना इस दुनिया में सब से साहुकार कौन है। नाम निकालते हैं ना। अभी तुम जानते हो यह पुरानी दुनिया ही खत्म हो जानी है। कितने बड़े2 मंदिर टिकाणे आदि बनाते रहते हैं। पैसे बहुत हैं ना। तुम बच्चों को मालूम है सभी यह खलास होने का है। मनुष्यों को कुछ भी पता नहीं। उन्होंने सुना है 40 हजार वर्ष पड़े हैं तो घोर अंधियारे में है। कल्प–2 ऐसा ही होता है। वह घोर–अंधियारा में रहते हैं। तुम बाप से वरसा लेते हो। बाप कहते हैं कल्प पहले भी तुमने मेरे से वरसा लिया था। बाप को कोई खुशी नहीं होती। बाप तो पढ़ाते हैं ना। खुशी तुमको होती है। शिव तो कहते हैं यह ड्रामा है मैं भी पार्ट बजाने आता हूँ। और तो कोई ड्रामा का राज बता न सके। बाप को कोई भी बात का आश्चर्य नहीं लगता। जानते हैं सृष्टि का चक्र अनादि फिरता रहता है। रामराज्य और रावण राज्य का खेल है जिसको मैं ही जानता हूँ। मुझे हर्ष–शोक कुछ भी नहीं होता। हर्ष है सुखधाम में, शोक है दुखधाम में। मैं तो दोनों से ही न्यारा हूँ। उसको कहा जाता है सुखधाम। शिवबाबा तुमको सुनाते हैं यह भी सुनते रहते हैं। आवाज़ निकलता है तो इनके कान भी सुनते हैं। आवाज़ तो मुख से निकलता है ना। तो जहाँ तहाँ गऊमुख बना दिया है। बाप को पढ़ाने लिए मुख काम में आता है। बाप को बुलाया भी है इसलिए कि आकर पढ़ाओ। सो मैं पढ़ा रहा हूँ। यह समझने की बातें हैं। टाइम थोड़ा है। समझना है, समझाना है। बाबा तो सारी दुनिया को नहीं बैठ सुनावेंगे ना। तुम हो खुदाई खिजमतगार। खिजमत तो सम्मुख होनी चाहिए ना। ऊपर से होती है क्या। सच्चे2 खिजमतगार तुम हो। ऐसी खिजमत करो तो मनुष्य आधा कल्प फिर कब दुख न देखे। देवताएँ कोई खिजमत नहीं करते हैं। एक ही बेहद का बाप संगम पर आकर तुमको सिखलाते हैं। एक खिजमत करना चाहिए। मनुष्य कोई खिजमत थोड़े ही करते हैं। वह तो दुख ही देते आते हैं। सोसल वरकर्स क्या सर्विस करते हैं। तुम्हारी खिजमत और उनकी खिजमत में रात दिन का फर्क है। उनको भी समझाना चाहिए हम मनुष्य को देवता बनाते हैं। हमारी यह ईश्वरीय मिशन है। तुम्हारी है आसुरी मिशन; परन्तु अभी तुम सीधा कह नहीं सकते हो। बिगड़ पड़ेंगे। आगे चल आपे ही समझेंगे। मनुष्यों को यह पता नहीं है कि हम आसुरी सम्प्रदाय हैं। सिर्फ देवताओं के आगे ही कहते हैं हम असुर हैं, अपनी आसुरी गुण उनके आगे वर्णन करते हैं। बाप समझाते हैं तुम कैसे पूज्य से पुजारी बने हो। फिर पुजारी से पूज्य बनना है। ल0ना0 के सूर्यवंशी डिनायस्टी चलती है तो जरूर उन्हों के बच्चे भी होंगे।

तुम निमित्त बने हो विश्व में शान्ति स्थापन करने लिए। आत्मा ही समझती है हमको अभी कोई अशान्ति फैलानी नहीं है। बाप कहते हैं तुम सभी को शांत बनाकर मुक्तिधाम में ले जाने वाला हूँ। तुमको फिर अशान्त न होना चाहिए। अशान्ति बगुल फैलाते हैं। तुम बगुलों का आवाज़ सुनो तो बन्द करो कान। तुम हंस हो ना। तो नापसन्दी की बात सुनो ही नहीं। देखो भी नहीं। इन आँखों से देखते हुए भी देखो नहीं। अच्छा मीठे–2 सिकीलधे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

" अपन को आत्मा समझ बाप की याद में हो? सुखधाम–शान्तिधाम याद है? "